वेदों की खुशबू

ओ३म्
(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

वेद सब के लिए

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values and Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 82	Year 8	Volume 8	May 2019 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual-Rs. 120- see page 6

सच्चा ईश्वर भक्त बनने के लि हर रोज कुछ न कुछ दया का काम करना चाहिए।

दीन–दुखी की सेवा करना, और सदा खुश रहना। दया–क्षमा–करूणा–सागर में, स्नान हृदय से करना मानवता के विमलदीप को, हरपल प्रज्वलित रखना। ईश–भक्ति का यही मार्ग है, छलनाओं से बचना।

सुबह का समय था। स्वामी करुणानन्द गंगा के किनारे टहल रहे थे। ठंडी–ठंडी हवा बह रही थी पंछी चहचहा रहे थे। गंगा की लहरें लहर–लहर कर किनारे की ओर बढती चली आ रही थी। स्वामी करुणनन्द जी का ध्यान अचानक ही सामने के पीपल के पेड़ की ओर गया, उन्होंने देखा कि पेड़ के नीचे कोई युवक बैठा रो रहा है। स्वामी जी उसके पास गए और उन्होने प्यार भरे शब्दों में कहा–'बेटे! तुम इस सुनसान जगह पर बैठकर क्यों रो रहे हो? स्वामी जी के प्यार भरे शब्दों को सुनकर, उनके पैरों को पकड़कर युवक जोर से सिसक–सिसक कर और अधिक रोने लगा। कुछ समय के बाद आँसुओं को पोंछते हुए उसने कहा–'महात्मन! मेरे पूज्य माता–पिता बहुत धनी हैं। मुझे हर प्रकार का सुख है। मै पढ़ा–लिखा भी हूँ, फिर भी मन मे शांति नहीं है कुछ भी समझ मे नहीं आ रहा है कि मैं किस प्रकार शान्ति प्राप्त करूँ।

Contact :
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
231, Sec. 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2016-2018

स्वामी करुणानन्द ने गंभीर स्वर में कहा–''शान्ति की खोज में दर–दर भटकने वाले युवक! केवल धन और ज्ञान से शान्ति नहीं मिलती। धन और ज्ञान का जो दाता है, जब तक उसकी भक्ति नहीं की जाती है, तो धन के द्वारा अभिमान पैदा होने लगता है। अभिमान मानव के जीवन में क्रोध पैदा करता है और जैसे ही जीवन में क्रोध आया फिर जीवन शान्ति से दूर चला जाता है। अशान्ति से भरा हुआ आदमी का जीवन विष का सागर बन जाता है।

सूरज का प्रकाश तेजी के साथ फैलता जा रहा था। युवक ने सूरज की ओर देखा। सूरज चमक रहा था। जीवन भी चमक उठता है, यदि आदमी के जीवन में कोई लक्ष्य हो। लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए लगातार कोशिश करनी पड़ती है। युवक को ऐसा अनुभव हुआ कि चमकता सूरज उसे कोशिश करने के लिए कह रहा है। युवक के विनम्र होकर कहा–'स्वामी जी! ईश्वर की भक्ति किस प्रकार की जाए आप दया करके बताइए, ताकि मैं भी ईश्वर भक्ति के मार्ग पर चलकर शान्ति प्राप्त कर सकूँ।''

जीवन के पारखी स्वामी करुणानन्द ने युवक के चेहरे पर बादलों की तरह उमड़ते भावों को गौर से देखते हुए कहा–'पुत्र! ईश्वर–भक्ति का मतलब है– आदमी दुनियां के कामों को करते हुए अपने जीवन को दीन–दुखियों की सेवा में लगाए, मानवता के हर एक काम को करते हुए गौरव अनुभव करें। ईश्वर महान–दयालु है, इस लिए सच्चा ईश्वर भक्त बनने के लिए हर रोज कुछ न कुछ दया का काम करना चाहिए। जब आदमी दया–क्षमा–प्यार–नम्रता आदि गुणों से अपने जीवन को भर लेता है, तब मन शान्ति से भर जाता है और इस प्रकार मावन को अनुभव होता है कि जीवन का हर पल संगीत की तरह आनन्दमय बन गया है ईश्वर–भक्ति की ओर ले जाने वाले साधन है।''

युवक वेद–वर्धन का उदास चेहरा स्वामी जी के इस संदेश से फूलों सा मुस्करा उठा। वह स्वामी जी को प्रणाम करके चमकते हुए सूरज को देखता हुआ घर की ओर चल पड़ा। उसके हृदय में स्वामी जी की प्रेरणा से एक ऐसा सूरज उग गया था जो जीवन को सदा मानवता के प्रकाश से आलोकित करता रहेगा।

सूरज प्रकाश फैलाकर ईश्वर की पूजा कर रही है, चाँद चाँदनी बाँटकर ईश्वर की भक्ति कर रहा है, फूल खुशबू फैला कर ईश्वर की महिमा को बता रहा है, इसी प्रकार तुम भी इन्सान बनकर इन्सानियत फैलाओ।

पुस्तक

(English book of short stories)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है Our musings। इसकी कीमत 150 रूपये है।

जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रूप्या भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकांउट(Bank Account) में पैसे डाल कर मंगवा सकते है। भेजने का खर्चा हमारा होगा। Account Nos वही हैं जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है।

मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ख्याल रखें पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। Book is in English से जुड़ी है। Stories are on various aspects of human life.

नीला सूद, भारतेन्दु सूद 0172–2662870, 9217970381

World cup final in the realm of spiritualism

Bhartendu Sood

The vintage world cup final which was played at Lords in England, between favourites England and not highly fancied New Zealand has already acquired a place in history for many firsts but this final match had its doze of great lesson in spiritualism. What is most astonishing that it came out not from sages but the players in black and blue, who were fighting for the crown, which one gets an opportunity to grab once in four years.

First belief that got reinforced was that you are wrong if you think YOGA is only confined to moving and stretching your limbs. According to sage Patanjali, YOGA is about restraining your emotions and to display equanimity in all situations whether you have won a hard battle or had to face defeat. The Bhagavad Gita describes yoga as a state of equanimity, achieved by cultivating a detached but unified outlook, serenity of mind and skill in action. If one person who has passed this test in the true spirit of Bhagwat Gita's concept of Yoga, then it is New Zealand cricket captain Kane Williamson. His conduct after World cricket cup final is exemplary and worth emulating.

The serenity on his face was simply enviable even for gods or god-men. Indeed, **YOGA is what Kane Williamson demonstrated.**

It proved those wrong who say it is only well directed efforts which bear fruit and the word destiny is in the dictionary of weak. The events in the grueling eight hours long final unfolded that with hard work you need luck also and indeed hard work and lady luck form the best pair. It was only England's good luck which separated England from New Zealand. Otherwise who will believe that throw from New Zealand player Martin Guptill could touch Stokes bat to run to the boundary and umpire unintentionally would commit the grave error of awarding six runs which logically and as per rules should have been five, as second run was not completed. It is this one run which prevented the New Zealand to be a rightful winner of the cup which they could not do despite having made to finals thrice.

Last, a heartwarming revelation by England's star player Stokes, who is rightly being considered for Knighthood by his country. He is reported to have gone to the umpire to say that

he should reverse his decision of having awarded four runs of over throw as it had resulted only because his bat came on the way to obstruct Guptill's throw to the wicket to run him out. It is incredible that a player can rise so high to throw away something which his country yearned for almost five long decades. Though the ODI tournament had its origin in England but the much envied crown always eluded it.

Pt. Jawahar Lal Nehru, the first PM of India, once said 'plays the game with the spirit of the game'. Life is full of failures and success. When we play a game too, we may either win or lose. "Sportsman spirit" is the spirit of accepting one's success with humility.To me this world cup will be remembered for very high standards of sportsman spirit displayed by both the sides, something rare in the highly competitive environment whether it is sports or business.

यदि आपको ठीक लगे तो इनकी सहायता करें

इन सज्ज्न का नाम श्री पवन भारती है, बिहार के रहने वालें हैं, पिता बूढ़े किसान, बहुत कम जमीन , आयु 25 वर्ष, विवाह हो चुका है,B.Tech, MBA आप की तीन महीने पहले दोनो किडनी फेल हो गये, डायलिस पर महीने का 25000 के करीब खर्च है। टरांसपलाट transplantका इंतजाम परिवार में हो गया है। इस भयंकर बिमारी के कारण आय का साधन खत्म हो गया है। आप सहायता करना चाहें तो इस नम्बर पर सर्म्पक कर उनसे बात चीत कर सकते हैं..... 9801776481 मेरा सर्म्पक इन से पी जी आई में हुआ था। मेरा इन से केवल मानविय रिश्ता है।

पैसे आप सीधा उन्ही को भेजे ,
हों मुझे आप नाम व अपना फोटो भेज दें।
मेरा नं. है–9217970381
Email-bhartsood@yahoo.co.in and bsood0@gmail.com
हमारे 32 सैक्टर के उप–प्रधान श्री ओम प्रकाश सेटिया जी ने 1000 रूप्ये दिये है। श्री तरूण गोयल ठियोग ने 2000 रू दिये।

Pawan Kumar Bharti
ICICI Bank
Account No-177201503685
IFSC code—ICICI0001772
Mobile-9801776481

जब कर्मफल का विधान है तो फल देने वाला भी अवश्य है

कुछ समुदाय कर्मफल के विधान को तो मानते हैं पर फल देने वाले की सत्ता को नहीं मानते। इस बारे में वैदिक मान्यता अलग है। वैदिक मान्यता के अनुसार हमारे कर्मो का फल ईश्वर देता है। यह स्वभाविक है कि आदमी अपने कर्म का फल, खासकर जब उसका कर्म बुरा है, स्वयं अपने आप भोगना नहीं चाहेगा। अतः कोई न कोई शक्ति अवश्य है जो फल देती है व यह भी अवश्य है कि वह शक्ति न्यायकारी है, तभी उसकी सत्ता को माना जा सकता है।

ऐसे में यह तर्क स्वभाविक लगता है कि कोई कर्म का फल देने वाला अवश्य होना चाहिये। अगर और गहराई में जाएं तो यह कहना गलत नहीं होगा कि कोई भी अपराधी अपने आप दंड का भुगतान नही चाहता। दंड तभी मिलेगा अगर कोई न्यायधीश होगा। अर्थात इस विशाल संसार में जिसमे अरबों मनुष्य व प्राणी रहते हैं, कोई ऐसी शक्ति अवश्य है जो कर्मफल के विधान को उचित फल देकर चला रही है और वह शक्ति न्यायकारी ईश्वर है, और कोई नहीं।

अगर हमारे द्वारा किये कर्मो का फल देने वाला न हो तो सारी व्यवस्था डगमगा जायेगी। शास्त्रों में इस स्थिती को एक बहुत सुन्दर दृष्टांत द्वारा बताया गया है––एक वृक्ष पर दो पक्षी बैठे हैं। एक पक्षी पेड़ पर लगे फलों को जिन में कुछ खट्टे हैं कुछ मीठे हैं खाते जा रहा है जब की दूसरा पक्षी फल नहीं खा रहा वह केवल दूसरे पक्षी को जो कि पेड़ पर लगे फलों को खा रहा है, देख रहा है। जो पक्षी पेड़ पर लगे फलों को खा रहा है वह आत्मा है जब कि दूसरा पक्षी जो खा नही रहा केवल दूसरे पक्षी को खाते हुये देख रहा है, वह परमात्मा है। आत्मा कर्म में लीन है जब की परमात्मा आत्मा के कर्म का फल देती है।

अध्यातमवाद और मायावाद में अन्तर

प्रत्येक वस्तु को आत्मा के दृष्टिकोण से देखना अध्यातमवाद है। किसी भी कार्य को करते समय यह देखना कि इसको करने से आत्मा का उत्थान है या पतन। और यदि जवाब मिलता है कि इसमें आत्मा का पतन है तो उसे किसी भी हालत में नहीं करना, चाहे उस में करोड़ो रूपयों का लाभ ही क्यों न हो। इसी तरह अगर जवाब मिलता है कि इस में आत्मा का उत्थान है तो उसे अवश्य करना। यह है अध्यातमवाद।

हर एक चीज को भौतिक लाभ और शारीरिक सुख की दृष्टि से देखना मायावाद है। मायावादी भौतिक लाभ और शारीरिक सुख के लिये किसी भी हद तक अपने को गिरा देता है। उसने आत्मा का हनन कर दिया होता है।

DIARY OF PLEASANT MEMORIES

Ms Neela Sood

For everyone, life is a roller coaster ride, mixture of good and bad events, but our wisdom lies not to live by taking note of bad incidents only and then remain stuck to them. Instead, we should look back to those incidents which had filled our life with happiness and these should be used to nullify the impact of unpleasant happenings. This very approach often saves us from taking unpleasant decisions as this incident demonstrates.

Jyoti is my friend's daughter. Her mother never misses an opportunity to give her tips for a happy life. At the time of her marriage her mother presented her with an unusual gift----- a beautiful diary and also explained the method to use: “Jyoti, this is my parting gift. Whenever you have some good and memorable happening, just jot down on it with date. Also put one snap of that event. But avoid recording the unpleasant ones. Keep it, as you keep ornaments”

Jyoti religiously followed her mother's instructions and would record all pleasant happenings, ---- celebrations on her husband Vinod's birthday; they went for holidaying to Kerala, celebrations on the birth of their child and fanfare on his subsequent birthdays, and so on.

However, after a few years, differences erupted between them leading to arguments and unpleasant scenes. A situation reached when they regretted having entered in to wedlock and decided to separate from each other.
Jyoti called her mother, recounting the developments she informed her of her decision to go for mutual divorcé. Mother listened patiently and replied “Sure, girl, that's no big deal. Just do whatever you want. It is your life...But before that, I advise you to read the diary, I had presented you on your marriage and I'll be happy if Vinod also reads.”

As Jyoti was reading the diary, the pleasant memories started removing the thick crest of hatred in her mind. By the time she had finished, her eyes had welled up. Impulsively she ran to her husband and remarked sobbingly, “ Vinod, past is not only history, it is an inspiration too. You can see for yourself”

The reading of diary revived the old bonhomie. Vinod stealthily went to Jyoti and taking her in to his arms said with the romance of the good old days , “Hey, let us fill up these blank pages soon and ask Mummy for another diary.”

So, instead of letting the mind turn itself into a trash bin, filled with negative thoughts, till the terrible stench starts emanating from it, we, with our wisdom, can make it a treasure chest of most cherished things. All that we need is to visit our good times. What method we adopt depends upon us. One of ways is to revisit the album of yesteryear photographs. Nowadays stress is only on taking photograph. No body visits the past collection. But, we should make time for it. My husband has been writing daily diary for the last 50 years. Every day he writes one page but reads three pages from the old ones.

महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचार

मनुष्य कौन है?

मनुष्य वही है जो कि मननशील होकर दूसरों के सुख दुखः हानि लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे परन्तु धर्मात्मा चाहे निर्बल भी हो उसका सम्मान करे। यही नहीं धर्मात्माओं की समय पड़ने पह अपने पूरे सामर्थ्य से रक्षा करे और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती राजा ही क्यूं न हो उसके नाश के लिये अपना सर्वस्व लगा दे।

मनुष्य का धर्म?

महर्षि दयानन्द की दृष्टी में धर्म को देश, जाति,वर्ग, में सीमित नहीं किया जा सकता। मनुष्य मात्र के लिये व्यवहार में लाने योग्य धर्म एक ही होता है, उसे मानव धर्म कहें या विश्व धर्म कहें। धर्म का सार पावनता है, जिसका न तो धार्मिक संगठनो से कुछ लेना देना है,न ही उस मन से जो अन्धविश्वास में फसा हुआ है या फिर अन्धविश्वास से पैदा हुये किसी मत मतान्तर में खोया हुआ है। उनके अनुसार धर्म के गुण हैं———मन,वचन,कर्म से एक होना, निष्पक्ष बर्ताव करना, सदव्यवहार करना, किसी से द्वेष ईर्ष्या व घृणा न करना, परोपकार करना, सत्य व्यवहार करना व वेदों के अनुकूल आचरण करना आदि। यह सभी गुण पूर्ण रूप से वैदिक धर्म में मिलते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में बहुत ही सरल शब्दों में बताया है कि 'धर्म वह है जिसमें परस्पर किसी का विरोध न हो अर्थात धर्म सार्वभौम है जिसका किसी विशेष देश, जाति तथा काल से खास संबंध नही होता। जो ईश्वर की आज्ञा का यथावत पालन और पक्षपातरहित न्याय सर्वहित करना है, जो कि वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिये ही मानने योग्य है, वह 'धर्म' कहलाता हैं।

जो न्यायचरण सबके हित का करना आदि कर्म हैं उनको 'धर्म' और जो अन्यायचरण सब के अहित के काम करने हैं उनको 'अधर्म' जानो (व्यवहारभानु)। धर्म की सरल परिभाषा है कि 'स्वस्य च प्रियमात्मनः' अर्थात जैसा हमारी आत्मा को अच्छा लगे या व्यवहार आप अपने लिये दूसरों

से चाहते हैं वैसा ही व्यवहार आप भी दूसरों से करें। ऐसा व्यवहार कदाचित न करें जैसा व्यवहार आप नहीं चाहते कि दूसरे आप के साथ कभी करें। बस यही धर्म है। अच्छा करोगे तो अच्छा पाओगे और बुरा करेंगे तो बुरा ही हाथ आएगा।

महर्षि दयानन्द ने मनुष्य के लिये कुछ कर्तव्य बतायें हें। यह भी मनुष्य के धर्म का अंग है। संसार का उपकार करने के लिये कटिबध रहना मनुष्य का धर्म है। इस कार्य को करने के लिये मनुष्य को सारे विश्व को अपना परिवार मानने के लिये कहा गया है, अर्थात धर्म, जाति, देश, भाषा व रंग के भेदभाव से उपर उठकर सबका कल्याण करे। मनुष्य अपनी उन्नति में ही सन्तुष्ट न रहकर सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझे। यह तभी सम्भव है जब सम्पन लोग अपने से नीचे वर्ग के लोगों को उपर उठाने की कोशिश करें।

मनुष्य सभी कार्य सत्य व असत्य को विचार कर धर्मानुसार करे। अर्थात लोभ, मोह, काम, क्रोध के वशीभूत होकर न करे। ऐसा करने में भले ही उसका कुछ समय के लिये नुकसान क्यूं न हो, कयूंकि धर्म के नियमों पर चलना ही अन्त में सुखकारी है। सत्य के महत्व के बारे में महर्षि दयानन्द लिखते हैं–––––सत्य आचरण का ठीक ठीक फल यह है कि जब मनुष्य निश्चय करके केवल सत्य ही मानता, बोलता व करता है तो वह जो जो काम करता है और करना चाहता है वे सब सफल होते हैं।

मनुष्य से आवाहन किया गया है कि सत्य को ग्रहण करने व असत्य को छोड़ने में वह सदैव तैयार रहे।

जीवन को यज्ञमय बनाना भी मनुष्य का धर्म है। महर्षि दयानन्द का कहना था कि अपने दैनिक जीवन को यज्ञमय बनाना मनुष्य का धर्म है। 'यज्ञ' शब्द का अर्थ है त्याग व दान अर्थात कल्याण व परोपकार का कार्य। ''यज्ञ' वै श्रेष्ठ तमं कर्म' कहकर महर्षि दयानन्द ने मनुष्य को अग्नि की लपटों के सामान निरन्तर उॅचा उठने,प्रकाशवान बने रहने तथा अग्नि के सामान तेजस्वी बने रहने का सन्देश दिया हैं।

जिन पांच यज्ञों का मनुष्य को दैनिक जीवन में पालन करने के लिये कहा गया है वे है,;1 ब्रहम यज्ञ––प्रातः काल में उपासना द्वारा परमात्मा, जो कि हमें प्राण देता है, पालता है व रक्षा करता है, का धन्यवाद करना व श्रेष्ठ बुद्धि के लिये व सारे प्राणी जगत कीं सुख शन्ति के लिये प्रार्थना करना। ;2 अग्नि होत्र––– अग्नि होत्र द्वारा पर्यावरण को शुद्ध करने के साथ साथ अग्नि की लपटों के सामान निरन्तर उॅचा उठने,प्रकाशवान बने रहने तथा अग्नि के सामान तेजस्वी बने रहने के लिये प्रभु की स्तुति करना। ;3 पितृ यज्ञ––––घर मे माता पिता, दादा दादी, नाना नानी व दूसरे बर्जुगो की सेवा करना। ;4 अतिथि यज्ञ––––– घर मे आये अतिथि व विद्वान की सेवा करना ;5 बलिवैश्देव यज्ञ––––जो समाज मे असहाय हैं उनकी सेवा व सहायता। संसार में बसने वाले पक्षी, पशु के प्रति दया व सेवा आदि।

Happiness Festival in Delhi Govt. Schools

Delhi government school students who were once reluctant to share their problems, burdened by school syllabus and petty fights with their friends are now more relaxed and smiling. The reason, claim the teachers, is because of the Happiness Curriculum, introduced almost a year ago. On July 2, 2018, the Directorate of Education (DoE), New Delhi, had introduced Happiness Curriculum. A year later, the government schools are celebrating 'Happiness Utsav' from July 16-31, 2019.

A list of several activities including drawing mela, discussions on selfchange, rally, slogan writing and skit, has been shared with the schools. These activities will be conducted every day during the special Happiness Assembly for classes up to VIII. The activities focus on many aspects of the curriculum including mindfulness, empathy and gratitude. The festival is being celebrated to mark the first anniversary of the Happiness Curriculum and students are participating with enthusiasm.

Happiness Curriculum is similar to its name, leading to the emotional and mental growth of the 'happy' students in the schools.

The curriculum is inculcating some crucial values such as empathy, gratitude, kindness and collaboration in the students, which will help them in their holistic development." To initiate a discussion on value-based learning. Students have acquired a better sense of self-awareness and compassion over the last one year. To showcase gratitude towards the self, family, society and nature, the students will also paint a gratitude wall in the school premises.

We need to do away with Bi-elections?

If we keep into consideration the colossus expenditure in terms of money and time both, apart from the damage the bi-elections inflict on the governance- for a month Ministers are seen camping at the constituency undergoing bi elections, it will be appropriate to amend the constitution and do away with bi-elections. Even in USA, a strong democracy, by -elections are not held.

There can be many way out to have representation of that constituency in the law making body. For example, the party can be given the option to nominate a person from the same constituency or the same family or the one who was a runner up in the election can be asked to fill the vacancy.

Likewise those who quit membership of one particular house to fight election for another house should be allowed to do, only after paying Rs 5 crore towards the election conducting cost. Rationale behind is- why tax payer should bear this burden which arises because of the whims of a Neta

जीवन में सफलता व उत्कृष्टता के लिए अनिवार्य है केवल सकारात्मक भावों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए

मुझे बचपन से ही बागबानी का शौक रहा है जो आज भी जारी है। घर में गमलों में जितने भी पौधे रहते हैं उन्हें मैं स्वयं ही लगाता हूं। पौधे बाहर से कम से कम खरीदता हूं। कई बार बीज बोकर या कलम लगाकर पौधे तैयार कर लेता हूं तो कई बार स्वयं बिना बीज बोए या कलम लगाए भी पौधे मिल जाते हैं। प्रश्न उठता है कि बिना बीज बोए या कलम लगाए कहां से मिलते हैं पौधे मैं पौधों की कटाई–छंटाई अथवा निराई भी स्वयं ही करता हूं। पौधों की कटाई–छंटाई अथवा निराई या फालतू उग आए पौधों को उखाड़ते समय बहुत सतर्क रहता हूं। फूलों अथवा फलों के पक जाने पर प्रायः उनके बीज वहीं झड़ जाते हैं और मिट्टी में मिल जाते हैं जो बाद में अनुकूल परिस्थितियां होने पर स्वयं ही उग आते हैं। मैं स्वयं उग आये ऐसे पौधों को लापरवाही से उखाड़ कर फेंकने की बजाय उनकी सुरक्षा की ओर अधिक ध्यान देता हूं। उन्हें हर तरह से बचाने का प्रयास करता हूं और जब वे थोड़े बड़े हो जाते हैं तो उन्हें दूसरे गमलों में लगा देता हूं।

हमारे चारों ओर न तो फूलों के पौधों की कमी होती है और न दूसरे बड़े वृक्षों की। ज़रूरत होती है उन्हें पहचानकर उन्हें नष्ट करने या अन्य किसी प्रकार से नश्ट होने से पहले पुनः सही जगह पर लगाने की। यदि हमने एक बार उन्हें बचाकर सही परिवेश उपलब्ध करवा दिया तो वे भी अपने पूरे जीवन काल तक हमारा साथ देंगे ओर हमें आकर्षक रंग–बिरंगे व सुगंधित फूलों और दूसरी उपयोगी चीजों का उपहार देते रहेंगे। यदि हम प्रकृति की रक्षा करेंगे तो प्रकृति भी अवश्य ही हमारी रक्षा करेगी। यही स्थिति हमारे विचारों और आदतों की भी होती है। कहा गया है कि हम बिल्कुल वैसे ही होते हैं जैसी हमारी सोच या हमारे विचार होते हैं। हम जैसे विचार रखते हैं अथवा जैसी आदतों का निर्माण अथवा विकास करते हैं वैसा ही हमारा जीवन बन जाता है। इसलिए जीवन को सार्थक बनाने के लिए अच्छे विचारों का चुनाव करके उन्हें

स्थायित्व प्रदान करना अत्यंत आवश्यक है।

अब प्रश्न उठता है कि अच्छे विचारों से जीवन कैसे बनता या संवरता है? हमारे मन में उठने वाले विचार या तो अच्छे होते हैं या बुरे। इन्हीं विचारों के कारण हम कार्य करते हैं और हमारी आदतों का निर्माण होता है। अच्छे अथवा सकारात्मक विचार अच्छे कार्य करने के लिए उत्तरदायी होते हैं तो बुरे अथवा नकारात्मक विचार गलत कार्य करने के लिए उत्तरदायी होते हैं। विचारों से ही हमारी आदतों का निर्माण व विकास होता है। हमारे जैसे विचार अथवा भाव होंगे वैसी ही हमारी आदतें बन जाएंगी। इसलिए अपने विचारों अथवा भावों को ठीक से देखना और उनका विशलेषण करना सीखना बहुत महत्त्वपूर्ण है। विचारों अथवा भावों के सही चुनाव के बाद यदि हम केवल अच्छे अथवा सकारात्मक विचारों अथवा भावों पर ही ध्यान केंद्रित कर लें तो वे ही हमारे जीवन की वास्तविकता बन जाएंगे इसमें संदेह नहीं। एक किसान नई फसल आने पर सबसे पहले अगली फसल बोने के लिए न केवल फसल में से अच्छे से अच्छे बीजों का चयन करता है अपितु उन्हें पूरी तरह से सुरक्षित भी रखता है।

अच्छे विचार बिल्कुल अच्छे बीजों की तरह ही काम करते है। हम नन्हे पौधों अथवा बीजांकुरों की पहचान की तरह ही अच्छे विचारों अथवा भावों की पहचान करना अवश्य सीख लें। साथ ही हममें जो अच्छी आदतें हैं चाहे वे कितनी भी छोटी क्यों न हों उन्हें भी पहचानें और उन्हें नष्ट होने से बचाने का प्रयास अवश्य करें। यही छोटी–छोटी अच्छी आदतें एक दिन बड़ी बन जाती हैं और बड़े लाभ का कारण बन कर हमारे जीवन में क्रांति ला देती हैं। अच्छी आदतें चाहे कितनी भी छोटी क्यों न हों उन्हें न तो महत्त्वहीन ही समझना चाहिए और न कभी उन्हें त्यागना ही चाहिए। उन्हें निरंतर व्यवहार में लाने का प्रयास करते रहना चाहिए। हम जिस बड़ी अच्छी आदत अथवा अच्छाई की प्रतीक्षा में रहते हैं उसके हमारे पूरे जीवन काल में घटित होने की संभावना कम ही रहती है। वैसे भी हम किसी बड़ी अच्छी आदत के कारण बहुत से लोगों से नहीं जुड़ सकते जबकि छोटी–छोटी अच्छी आदतों को नियमित रूप से व्यवहार में लाने पर हम असंख्य लोगों से जुड़ कर उनके मनों में अपना स्थान बना सकते हैं। अपने संपर्क और संबंधों का दायरा विस्तृत कर सकते हैं।

जीवन में हर क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए केवल सकारात्मक विचारों अथवा भावों पर ही ध्यान केंद्रित करना चाहिए। हमारी विडंबना ये है कि हम प्रायः उपयोगी पौधों के अंकुरों अथवा छोटे–छोटे पौधों को महत्त्वहीन समझने की तरह ही सामान्य अच्छे विचारों को भी नजरअंदाज कर देते हैं व अनुपयोगी विचारों पर ध्यान केंद्रित कर उन्हें जीवन की वास्तविकता में परिवर्तित कर डालते हैं। हमारा ध्यान हमारे उत्तम स्वास्थ्य व सक्रियता पर न रह कर प्रायः रंग–रूप व आकृति तथा व्याधियों पर केंद्रित रहता है। हम प्रायः भविष्य में होने वाली व्याधियों और समस्याओं की कल्पना कर न केवल वर्तमान में दुखी रहते हैं अपितु

अपनी गहन कल्पना द्वारा उन स्थितियों को वास्तविकता में भी परिवर्तित कर लेते हैं। हम अपने आसपास के उन लोगों की स्थितियों को भी स्वयं पर आरोपित करते रहते हैं जो ठीक अवस्था में नहीं होते। जो लोग वर्तमान में बड़ी उम्र में भी स्वस्थ व सक्रिय जीवन व्यतीत कर रहे हैं उन पर हमारा ध्यान कम ही केंद्रित होता है।

हम चाहें तो दीर्घायुप्राप्त, स्वस्थ व सक्रिय, समृद्ध अथवा लोकप्रिय लोगों के जीवन को स्वयं पर आरोपित करके उन जैसा बन सकते हैं। हम ऐसा आसानी से कर सकते हैं लेकिन पूर्ण विश्वास के अभाव में ऐसा नहीं हो पाता। समझा ये जाता है कि रोगी होने की वजह से लोग नकारात्मक विचारों से ओतप्रोत व निराशावादी हो जाते हैं लेकिन वास्तविकता ये है कि नकारात्मक विचारों से ओतप्रोत व निराशावादी होने की वजह से हम रोगी होते हैं। जीवन के अन्य सभी क्षेत्रों की वास्तविकता भी यही है। जीवन में किसी भी प्रकार की समृद्धि अथवा अभाव हमारे विचारों का ही परिणाम होता है। हम अपने खराब स्वास्थ्य अथवा विपन्नता के लिए विषम परिस्थितियों और दूसरे लोगों को दोष देते रहते हैं जबकि इसके लिए अन्य कोई दोषी नहीं होता क्योंकि ये पूर्णतः हमारा अपना चुनाव होता है। इसके लिए हमारे विचार ही पूर्ण रूप से उत्तरदायी होते हैं। जब तक हम विचारों के जमघट में से सही विचारों को चुनकर उन पर अपना ध्यान केंद्रित करना नहीं सीखेंगे हमारी समस्या का समाधान असंभव है।

*****

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 120 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दें
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :—
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFS Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFS Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFS Code - PSIB0000242**
3. **आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.**
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।
5. पैसे जमा करवा कर सूचित अवश्य कर दें।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।

शेष भाग पृष्ठ 16

इस लेख का निश्कर्ष्य यह है कि जब भी हमारे मन में किसी पुण्य का विचार आये तो अधिक न सोचे व कर डालें और जब पाप का विचार आये

धन से इस तरह भी प्यार न करो की पाप हो जाये।

वेद में मनुष्य को धन ऐश्वर्य का स्वामी बनने के लिये प्रार्थना करने के लिये कहा गया है। पर साथ में यह भी कहा है कि वह यह भी मान कर चलें कि इस सारे धन सम्पदा का मालिक वह ईश्वर है, हमें तों केवल त्यागमय भाव से भोगने का आदेश है। यह तभी सम्भव है जब इस धन को भोगते हुये भौतिक, मानसिक व अध्यात्मिक तीनों पहलुओं के बीच सन्तुल्न बना कर रखें, वरना यह धन पाप की और ले जाता है, जैसा कि अक्सर हम देखते हैं। धन से प्यार स्वभाविक है परन्तु इस तरह भी प्यार न करो की पाप हो जाये, जैसे कि पंचकुला में घटी यह घटना बता रही है।

पंचकुला के एक गांव के एक ही परिवार के चार सदस्यों की, जिस में की एक वृधा के साथ उसके द्विगत बेटे के बच्चे अर्थात उसके दो पोते व एक पोती है, बहुत ही निर्मम हत्या का मामला सामने आया है। इन हत्याओं को अल्ज़ाम देने वाला और कोई नहीं परन्तु उस वृधा की अपनी विवाहिता बेटी है, जिसने की इस काम के लिये कांटरैक्ट किलरज को दस लाख रूपये दिये। कोई सोच सकता है कि कोई बेटी अपनी मां की हत्या करवा सकती है? सचमुच अविश्वसनिय लगता है, परन्तु धन का लोभ ऐसा पाप भी करवा सकता है।

लोभ की प्रकाष्ठा देखिये–––वृधा को एनऐच –73 के लिये ऐक्वायर जमीन का 11 करोड़ मुआवजा मिला था। सभी चार बेटीयों को उसने इस धन में से एक– एक करोड़ दे दिया था जो कि हत्या में संलगन बेटी को भी मिला था, बाकी उसने द्विगत बेटे के बच्चे अर्थात उसके दो पोते व एक पोती के नाम कर दिया था। देखने वाली बात जो कि लोभ की प्रकाष्ठा को बताती है वह है किं उसके अपने पति की जमीन की कीमत भी 50 करोड़ से कम नही और वह भी इस हत्या में शामिल थां।

ऐसा तभी होता है जब हम धन कमाते हुये अध्यात्मबाद से दूर हो जातें है। सत्संग और अच्छी पुस्तकों का स्वाध्याय, अध्यात्मवाद का रास्ता है। जब मनुष्य अध्यात्मवाद की और मुख मोड़ लेता है तो काम, क्रोद्ध, लोभ , मोह और अहंकार का अंश उसमें कम होने लगता है और ईश्वरिय गुण, जिन में मुख्य हैं दया, करूणा, सेवा भाव, सन्तोष, जो हमसे कम भाग्यशाली है उन्हें कुछ अपनी सम्पती में से देने की भावना अर्थात दान, ईश्वर में विश्वास, धैर्य, विनम्रता, त्याग की भावना खुद व खुद आने लगती है जो कि पाप पूर्ण प्रवृति से दूर रखती है। वेद भगवान कहते है, हे मानव जो भी तेरे पास धन सम्पदा है उसे प्रजापती की समझकर जी।

किसी ने सत्य कहा है,

इस तरह न कमाओ कि पाप हो जाय

पुण्य करने में देर न करें और, पाप के विचार को टालते रहें

सीताराम गुप्ता

संस्कृत में एक सूक्ति है कि शुभस्य शीघ्रम्, अशुभस्य कालहरणम् अर्थात् शुभ कार्य को जितना जल्दी हो सके कर डालें लेकिन अशुभ कार्य को निरंतर टालते रहें। किसी भूखे–प्यासे अथवा वस्त्रहीन को देखकर हमारे मन में फ़ौरन उसकी मदद करने की इच्छा जागृत होती है। यह मनुश्य का मूल स्वभाव है। यदि हम तत्क्षण किसी की मदद करने के लिए आगे आ जाते हैं तो उसकी मदद हो जाती है और एक नेक काम भी लेकिन वह क्षण बीत गया तो संभव है हमारा विचार बदल जाए। हमारे मन में तर्क–वितर्क उत्पन्न होने लगें। हमें लग सकता है कि ये अकर्मण्य लोग हैं और हम कब तक इनकी मदद करते रहेंगे अथवा इनकी मदद करना इनको अकर्मण्य बनाना है।

बहुत सारी बातें हो सकती हैं लेकिन इतना निष्चित है कि यदि हम उस क्षण को चूक गए तो हम किसी नेक काम अथवा पुण्य से वंचित अवष्य रह जाएँगे। किसी छुटे हुए नेक काम को करने का अवसर दोबारा नहीं मिलता और हम सबने अपने जीवन में अवश्य ही कई बार ऐसा अनुभव किया होगा। तो ठीक ही कहा गया है कि शुभस्य शीघ्रम् अर्थात् शुभ अथवा पुण्य कार्य को शीघ्र करें। आज ही नहीं अभी करें। कबीर कहते हैं :

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब,
पल में परलय होयगी, बहुरि करेगा कब।

विचार का पूरक पक्ष है कि पाप न करें कभी अर्थात् अशुभस्य कालहरणम्। अशुभ अथवा पाप कर्म के लिए शीघ्रता न करें अपितु समय गुज़र जाने दें। संभव है कालांतर में कहीं से ऐसी सद्बुद्धि मिल जाए कि पाप कर्म से विरत हो जाएँ, उससे बच जाएँ। समय एक ऐसी औशधि है कि बड़े से बड़े ज़ख़्म को भी भर देती है। वैसे भी यदि भूल से भी एक ग़लत अथवा अशुभ काम या पाप कर्म किसी दबाव में भी कर बैठे तो ऐसे अनेक कामों की श्रृंखला बनते देर नहीं लगेगी और ऐसे दुश्चक्र से बाहर निकलना कठिन ही नहीं असंभव हो जाता है।

पाप क्या है और पुण्य क्या है सभी प्रबुद्ध जन अच्छी प्रकार से जानते हैं। वो दूसरी बात है कि हम अपने फौरी लाभ के लिए इसकी सीमाओं में परिवर्तन कर लेते हैं। महाभारतकार ने कहा है कि परोपकारः पुण्यायः पापाय परपीड़नम् अर्थात् परोपकार या किसी का भला करना ही पुण्य है व किसी को पीड़ा या कश्ट पहुँचाना पाप है। यही धर्म व अधर्म है। इसी महान विचार या दर्शन को गोस्वामी तुलसीदासजी ने अत्यंत सरल शब्दों में इस प्रकार से व्यक्त कर दियाः

परहित सरिस धरम नहिं भाई,
परपीड़ा सम नहिं अधमाई।

परहित अर्थात् परोपकार ही सबसे बड़ा धर्म है, पुण्य है और परपीड़न अर्थात् दूसरों को कष्ट पहुँचाना ही अधर्म है, पाप है। पीड़ा चाहे शारीरिक हो अथवा मानसिक पाप है अतः ऐसे किसी भी पाप कर्म से बचने के लिए एक ही उपाय है और वो ये कि किसी भी अशुभ कार्य को करने में शीघ्रता न करें। किसी को पुरस्कृत करना है तो शीघ्रता करें लेकिन किसी को दंड देना है तो थोड़ा ठहर जाएँ। बार–बार विचार

करें कि ऐसा करना उचित है या अनुचित। किसी ने हमारा अपमान कर दिया अथवा हमारा आर्थिक नुक़सान कर दिया तो हमारी इच्छा होती है कि हम भी उसके साथ ऐसा ही व्यवहार करें। ईंट का जवाब पत्थर से देने में हम ज़्यादा यक़ीन रखते है। लेकिन नहीं। स्वयं को ईंट का जवाब पत्थर से देने से रोकना ही श्रेयस्कर है।
कबीरदास कहते हैं:

गारी आवत एक है उलटत होई अनेक,
कह कबीर नहिं उलटिए, वही एक की एक।

यदि हम किसी की बत्तमीज़ी का उत्तर बत्तमीज़ी से नहीं देते तो संभव है जीवन में परिस्थितियाँ ही बदल जाएँ और हम अशुभ कार्य या पाप कर्म करने से बच जाएँ। महात्मा बुद्ध को किसी व्यक्ति ने गाली दी। बुद्ध ने प्रतिवाद नहीं किया और शांत भाव से उस व्यक्ति से पूछा, '' भाई यदि तुम मुझे कुछ उपहार देते हो और मैं उसे स्वीकार नहीं करता तो वो उपहार किसका हुआ?'' गाली देनेवाले उस व्यक्ति ने उद्दण्डतापूर्वक कहा, ''मेरा ही हुआ और किसका?'' ''तो फिर मैं तुम्हारी गालियाँ भी स्वीकार नहीं करता, '' यह कहकर बुद्ध शांत हो गए। गाली देनेवाला व्यक्ति भी चुप हो गया लेकिन साथ ही उसे अपनी ग़लती का भी अहसास हो चुका था। वह पश्चाताप से भर उठा और अपने को सुधारने के प्रयास में लग गया।

जहाँ तक हो सके अशुभ कार्यों को समझ कर उन्हें टालने का प्रयास करना चाहिए। चोरी, डकैती, हत्या, हिंसा, व्याभिचार, बलात्कार, मादाभ्रूण हत्या ही नहीं, किसी का अपमान करना, किसी को नीचा दिखाना अथवा अन्य किसी भी प्रकार से किसी का जी दुखाना भी पाप है। इनसे न बचने के परिणाम भयंकर हैं। अभी पिछले दिनों बलात्कार के दोशियों को सुनाई गई फाँसी की सजा से आप अनभिज्ञ नहीं होंगे। बुरे काम अर्थात् पाप कर्म का बुरा नतीजा। अनेक तथाकथित परमपूज्य धर्मगुरू अपने पुण्य कर्मों के कारण नहीं पाप कर्मों के कारण लोहे की सलाखों के पीछे जेल में प्रवचन करने व जीते जी बैकुंठ लाभ प्राप्त करने को विवश है।

कितने महान हैं हमारे धर्मगुरू जिन्हें जेल रूपी बैकुंठ में भी पीने के लिए गंगा जल और सेवा के लिए महिला वैद की ज़रूरत है। और हमारे जैसे लाखों–करोड़ों षिश्य जिन्होंने तथाकथित परमपूज्य धर्मगुरुओं को पैदा किया है पुण्य के अधिकारी हैं अथवा पाप के? यह हमारी धर्म के प्रति अज्ञानता, पाप–पुण्य के प्रति तटस्थता व नपुंसकता है जिसके कारण देश में हज़ारों ढोंगी करोड़ों लोगों को बेवकूफ बनाकर समाज का हर तरह से शोशण कर रहे हैं। वो दिन दूर नहीं जब संतवेशधारी सारे कपटी और व्याभिचारी सलाखों के पीछे होंगे। पाप कर्म किसी के हित में नहीं होता चाहे वह सामान्य नागरिक हो, विद्यार्थी हो, व्यापारी हो, ऊँची पहुँच वाला व्यक्ति हो, जन–प्रतिनिधि हो अथवा तथाकथित साधु–संत।

पाप कर्म अथवा अशुभ कर्म को टालते रहना ही हितकर है। पाप कर्म के अनेक रूप हो सकते हैं। वास्तव में हमारी हर बुरी आदत अथवा अच्छी आदतों का अभाव ही पाप कर्म अथवा उसके मूल में निहित है। मान लीजिए किसी ने हमें गाली दी। हमने भी दी। उसने हाथ उठाया। हम हाथ नहीं उठा सके लेकिन बदले की भावना में सुलगते रहे। एक कट्टे का इंतज़ाम किया और दाग दी दनादन गोलियाँ उसके सीने में। या फिर सुपारी ही दे डाली। कुछ कायर क़िस्म के लोग होते हैं। बहादुर तो नहीं होते पर पापी पक्के होते हैं। ख़ुद तो चींटी को भी नहीं

मारेंगे लेकिन आदमियों को मरवाने के लिए पानी की तरह पैसा बहा देंगे।

आप बतलाइए कि आप कितने ऐसे मित्रों और अपने रिष्तेदारों को जानते हैं जिन्होंने क़त्ल किया या करवाया और उसके बाद वो निश्चिंत होकर बैठ गए। यही संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य है कि हम सोचते हैं कि हमारे साथ ऐसा नहीं होगा जो आम लोगों के साथ होता है। हम नहीं मरेंगे या कम से कम हम ग़लत काम करेंगे और पकड़े नहीं जाएँगे। हम पाप करेंगे और बच जाएँगे। कानून से बच भी गए तो ख़ुद से कैसे बचोगे मियाँ? जो दूसरों की टाँगें खींचने में माहिर हैं, छोटी–बड़ी लकीरें खींचकर किसी को उठाने और किसी को गिराने में आनंद लेते हैं उनके चेहरों की रंगत बता देती है कि वो पुण्य से कोसों दूर पाप में लिप्त हैं।

पाप कर्म में लिप्त व्यक्तियों के चेहरों पर स्थायी रूप से धूर्तता का क्रीम–पाउडर चिपक जाता है। उनके ऊपरी साधुवेष के कारण लोग उन्हें कुछ कह तो नहीं पाते लेकिन उनके प्रति लोगों की जो भावनाएँ होती हैं वो देर तक छुपी भी नहीं रह सकतीं। हम अपने बाहुबली जनप्रतिनिधियों का कुछ बिगाड़ तो नहीं सकते लेकिन उनके प्रति हमारे मनों में जो भावनाएँ हैं उनसे भी आप सभी अवगत होंगे इसमें संदेह नहीं। उनके पाप का घड़ा जब फूटता है तब तक देर हो चुकी होती है लेकिन उन्हें भी अपने दुष्कर्मों की सजा तो अवश्य ही भुगतनी पड़ती है। तो पाप कर्म चाहे वो परपीड़न हो, सामाजिक पद–प्रतिश्ठा का दुरुपयोग हो, सामाजिक या राश्ट्रीय संपत्ति का ग़बन हो, रिश्वत या कमीशन हो इन सभी से दूर रहना, इन्हें टालते रहना अथवा इन सबसे निर्लिप्त रहना ही अच्छा है।

कहना आसान है कि पुण्य अभी करें और पाप कभी न करें लेकिन ये कैसे संभव है? है, संभव है। न पुण्य अथवा ,शुभ कर्मों की कोई सीमा है और न अशुभ कार्यों की ही। लेकिन हमारे पास समय की सीमा है। जीवन में प्रत्येक व्यक्ति के पास सौ साल या इससे थोड़ा बहुत कम या ज़्यादा समय ही होता है। कुछ को तो इतना भी नहीं मयस्सर हो पाता है। उसमें से कुछ बीत गया है। अब जो भी दस–बीस या पचास–साठ या कुछ अधिक साल बचे हैं वो सारा समय पुण्य कार्यों में लगाने का संकल्प ले लीजिए और आज ही शुरू हो जाइए।

केवल पुण्य ही करें पाप नहीं। पर कैसे? कर्म का मूल है विचार। सकारात्मक विचार द्वारा ही पुण्य संभव है अतः सकारात्मक विचारों को दृढ़ करते रहें। जब नकारात्मक विचार होगे ही नहीं तो पाप कर्म भी नहीं होगा। लेकिन नकारात्मक विचार तो रहेंगे। कोशिश करें कि उनके क्रियान्वयन की नौबत ही न आए। सकारात्मक विचार इतने ज़्यादा और इतने दृढ़ हों कि उनको पूरा करने में ही हमारी सारी ऊर्जा सारी सामर्थ्य लग जाए। नकारात्मक विचारों के क्रियान्वयन द्वारा पाप कर्मों के लिए ऊर्जा व सामर्थ्य बचे ही नहीं।

गाँधी जी ने अहिंसा के विषय में कहा है कि हमारी अहिंसा मात्र शारीरिक अहिंसा नहीं होनी चाहिए अपितु संपूर्ण अहिंसा होनी चाहिए। मन, वचन और कर्म तीनों से अहिंसक होना अनिवार्य है। इसी प्रकार पुण्य कर्म के लिए भी मन, वचन और कर्म हर प्रकार से सकारात्मक होना अनिवार्य है। आइए ढेर सारे सकारात्मक विचारों के बीज आज ही अपने अवचेतन मन में आरोपित करें और सदैव पुण्य कर्मों की लहलहाती फ़सलें काटते रहें।

शेष पृष्ठ 12 पर...

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

Unstable mind is a breeding ground for imaginary fears

This incident relates to the time when Lord Ram had moved to exile with his brother Laxman and wife Seeta in deference to the wishes of his mother Kakeyee. One morning Laxman spotted a huge procession led by his brother Bharat approaching them. His reflex reaction was that Bharat not content with grabbing the throne of Ayodhya, which rightfully belonged to Ram, wanted to finish his brother and to accomplish his mission he was coming with his warriors. Fumed, he started making highly derogatory remarks about Bharat and took his bow to wage a war. But Ram who by virtue of Yoga had a stable mind stopped Laxman and asked him not to act on the basis of imaginary fairs. Ram was right Bharat was coming with altogether a different mission.

Unstable mind is a breeding ground for imaginary fears and it can convert a heaven into hell. The less energy we spend on unnecessary emotional gyrations the more we have for intelligent decision making.

Sage Patanjali, the father of Yoga, in his Ashtanga Yoga advises a man to create a stable mind with yoga. It is the training of mind which imparts equanimity. It is a mental state that looks with equal ease at happiness and sorrow, at misery and luxury and treats success and failure in a same way. It looks at the world and happenings around with an open mind free of biases, fears and has only good and positive thoughts.

The man who develops a stable mind rarely commits blunders which he might have to rue later on.

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

पाठकों के पत्र

नीला सूद का लेख पढा– अपने शत्रु के कटुव्यवहार का बदला सदभावना से दें।

आपके अच्छे व्यवहार का सामने वाले पर कैसा प्रभाव पड़ेगा यह इस बात पर निर्भर करता है कि उसकी मानसिकता कैसी है। यदि कोई साँड़ आपको मारने के लिए दौड़ता आ रहा हो, तो आप विनम्रता से उसका मुकाबला नहीं कर सकते। यदि आप ऐसा करेंगे तो मूर्ख कहे जायेंगेए क्योंकि इससे आप स्वयं तत्काल नष्ट हो जायेंगे। यही बात ऐसे समुदायों पर लागू होती हैए जो अपनी हिंसक विचारधारा को दूसरों पर जबर्दस्ती थोपना चाहते हैं। आप उनको कितना भी प्यार करेंए परन्तु बदले में आपको केवल अत्याचार और अमानुषिक व्यवहार ही मिलेगाए क्यांेकि यही उनका मूल स्वभाव है। जिस गाँधी ने एक गाल पर थप्पड़ खाकर दूसरा गाल सामने कर देने की विचारधारा दी हैए वह किसी मुसलमान को भी बदलने में बुरी तरह असफल रहे। गाँधीगीरी इस समुदाय के मामले में पूरी तरह असफल रहती है। जो मूसल से ही मानता है वह प्यार से मान ही नहीं सकता।

वैसे लेख अच्छा है।

The Six 'A's of Success

Swami Tejomayananda

The simple definition of success is the achievement of a desired goal. If I want something and I get it, then I think I am successful, although that success may not be admirable. For example, when a terrorist strikes, and several people are killed, the perpetrator may call it a successful bomb blast. But surely, it is not a praise-worthy act. Suppose a poorly prepared student wants to pass the examination and he does that by copying, should his success be praised? In nutshell, means are as important as the end.

Therefore, when we talk about success, we should be clear that not only should the goal be noble, but the means to achieve it should be equally so. Why are some people successful, others not? That brings to my mind these six reasons,

1 Aptitude: It is your natural interest. What is it that you have aptitude for? Many times people are forced to do certain things for which they have no aptitude at all. Their heart is just not in what they are doing. They might achieve what they set out to do, but deep within, they are not happy. This is because their mind is somewhere else There are aptitude tests you can take to determine where your interest lies. But the test might reveal that you have an aptitude for more than one thing. What do you do then?

If you are doing something which interests you and for which you have a natural aptitude, there is a greater likelihood that you will succeed in it. So, maybe, through trial and error you can determine where your interests lie. Often times, you know what you have an aptitude for, but there is so much social, economic and familial pressure that you are prevented from following your heart. This is especially true when your interest lies in music, fine arts or sports. Family members will tell you there is no money to be made in those fields, that you should pursue something else. If you give in, you are likely to set yourself up for failure.

In college, I was a student of science. I have often been asked why I took up the study of Vedanta after studying science. I tell them you should ask me why I enrolled in the science programme when I had no interest in that subject at all! I was influenced by what my friends did. They pursued science, so I did, too. Then I discovered I had no interest in that. Luckily, Vedanta came into my life. I realised that it was what I wanted.

2 Aspiration: People may have an aptitude to do something, and even find themselves in situations that allow them to do what they like. But aptitude alone is not enough. You must aspire to achieve success in that particular field, be it in science, commerce, economics, politics, education or social work**. The Wright brothers worked in a humble cycle shop, but all the while they aspired to fly.** Significant contributions in any field have been made only because the person had great aspiration. Some may call it ambition, but there is a difference between the two. Aspiration is loftier than ambition. It is inspiration driven. It has none of the ego and possessiveness that accompanies ambition. Not every ambitious student who enrolls in the arts or science programme ends up becoming an artist or scientist.

3 Ability: Supposing I want to climb Mount Everest, but if I am unable to walk, will I ever be able to succeed? How can I, given that the basic ability to do that is missing? Ability may be physical or mental. Ability can be called our potential. We want to succeed; yet why do we fail? We've got the potential to perform, but the problem is we do not perform upto our potential, or rather, our full potential. Therefore, we put in half hearted efforts .This is the reason for failure.

4 Application: It is just performing according to our potential. Ability means potential to perform, application is performing upto our potential. Many parents complain that though their children are very talented, they never apply themselves to the task at hand. If you have talent but don't apply your mind to what you are doing, what can you achieve? Sometimes a person who does not have talent, but applies his mind, is more successful than a person who has the aptitude and ability, but lacks application.

5 Attitude: Life is not very simple. Sometimes you may not get what you want, sometimes you get less than you expected, sometimes more, and at other times you fail. Whether you win or lose, having the right attitude helps. But, what is right attitude? If you succeed, in success you must have humility. In failure you must have fortitude, patience, trust, and faith in yourself — and also the belief that not having succeeded does not mean the end of life. The suicide rate among students has increased because students give too much importance to only one area of success. The complete idea of success is not there. There are successful sportsmen and successful businessmen whose personal lives are failures. We are not talking of success in a particular field, but in all aspects of life. If you don't have emotional maturity, you break down. This happens even to brilliant students, because they lack the right attitude.

6 Altar of dedication: When you succeed, whom or what do you dedicate it to? What is your altar of dedication? Haven't you seen many authors dedicate their literary work to someone — their parents, their teacher, or even their nation? There is a beauty in doing that. Your ego is put aside, and the higher the altar of dedication, the greater the unfoldment of your potential. Your performance itself changes and you undergo a transformation. I read somewhere that an altar in life alters your life.

An altar of dedication is the most important qualification for success in any field. If you offer your abilities and success at the feet of the Lord, or your teacher, or the nation, then your actions become noble. Even if some goals are not reached, you are transformed as a person. That is the real success. Do you want to be a person who owns valuable things, or a person who has good values? It is said a man may be worth a billion dollars and yet be a worthless person.

To all the women students I say: Do not compete with men, because when you start doing that, you are already telling them that they are superior and that you are capable of doing exactly what they are doing. You are great in your own right. There are things you can do and they cannot. Act according to your aptitude. In trying to compete, you may be giving up your natural talent.

1. पत्रिका में दिये गये विचार लेखकों के अपने हैं। सम्पादक जरूरी नहीं उस से सहमत हो। लेखकों के टैलीफोन नम्बर दिये है, आप सम्पर्क कर सकते है। आपके लेख के बारे में विचार अवश्य प्रकाशित किये जायेंगे।

न्यायिक प्रक्रिया के लिये चण्डीगढ़ न्यायलय ही मान्य है।

2. विज्ञापन से सम्पादक के विचारों का मिलना, आवश्यक नहीं सम्पादक उस की किसी भी प्रकार जिम्मेवारी नही लेता।

श्री राम प्रजा को सत्य से जीतते थे

वाल्मीकि रामायण से –

श्री राम प्रजा को सत्य से, दीनों को दान से, गुरुओं को सेवा से और युद्ध में शत्रुओं को धनुष के द्वारा जीतते थे। (अयोध्या काण्ड 11–16)

राम का जाबालि को उपदेश –

1. ऋषि और विद्वान लोग सत्य को ही उत्कृष्ठ मानते हैं क्योंकि सत्यवादी पुरुष ही इस संसार में अक्षय मोक्ष सुख को प्राप्त करता है। (अयोध्या काण्ड 77–19)
2. मिथ्यावादी पुरुष से लोग वैसे ही डरते हैं जैसे सांप से। संसार में सत्य ही सबसे प्रधान धर्म माना गया है। स्वर्ग प्राप्ति का मूल साधन भी सत्य ही है। (अयोध्या काण्ड 77–20)
3. संसार में सत्य ही सुख–शान्ति एवं ऐश्वर्य का मूल है। संसार में सत्य से बढ़कर और कोई वस्तु नहीं है। (अयोध्या काण्ड 77–21)
4. राज्य, कीर्ति, यश और लक्ष्मी ही नहीं, अपितु स्वर्ग भी सत्यवादी पुरुष को ही प्राप्त होता है। अतः मनुष्य को सदा सत्य ही बोलना चाहिए। (अयोध्या काण्ड 77–26)

यत्र धर्मो हि अधर्मेण सत्य यत्र अनृतेन च हन्यते प्रेक्षमाणानां हताः तत्र सभासदः।। (मनुस्मृति 8–14)

अर्थ – जिस सभा में बैठे हुए सभासदों के सामने अधर्म से धर्म का और झूठ से सत्य का हनन होता है, उस सभा के सभासद मरे हुओं के समान ही हैं।

सत्यमेव जयते नानृतं, सत्येन पन्था विततो देवयानः। (मुण्डक उपनिषद)

अर्थ – सत्य पक्ष की ही जीत होती है, झूठ की नहीं। सत्य के मार्ग पर चलकर ही मनुष्य देवता बनता है।

महर्षि मनु द्वारा लिखित मनुस्मृति के पाँचवें अध्याय का श्लोक है –

अद्भिर्गात्राणि शुद्ध्यन्ति मनः सत्येन शुद्ध्यति।

अर्थ – (शुद्ध) पानी से शरीर शुद्ध होता है और मन सत्य के आचरण से शुद्ध होता है।

जो लोग समझते हैं कि किसी नदी या तालाब में डुबकी लगाने से पाप धुल जाते हैं और जो लोग व्यवहार में झूठ का सहारा लेते हैं उनके लिए महर्षि मनु का यह उपदेश है। सत्य आचरण का अर्थ है जैसा मन में हो वही बोले और उसके अनुसार ही काम करे। झूठ से तो मन मलीन ही होता है।

और भी –नासौ धर्मो यत्र न सत्यम् अस्ति। न तत् सत्यम् यत् छलेनाभ्युपेतम्।।

(महाभारत, उद्योगपर्व, विदुरनीति 3–58)

अर्थ – जहां सत्य नहीं वह धर्म नहीं और जिसमें छल–कपट है वह सत्य नहीं है।

वेद ने तो व्रत करने का ढंग भी यह बताया है कि सत्य का आचरण करने की प्रतिज्ञा करो।

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्। इदम् अहम् अनृतात् सत्यम् उपैमि।। (यजुर्वेद 1–5)

अर्थ – हे ज्ञानस्वरूप, सब व्रतों के पालक प्रभु! मैं यह व्रत करता हूँ कि असत्य के आचरण को छोड़कर सत्य का आचरण अपनाऊँ। आपकी कृपा से मेरा यह व्रत पूर्ण हो, सफल हो।

काश! हमारे हिन्दू राजनेता भी सत्य को अपनाते और जनता के सामने सत्य को ही परोसते।

कृष्णचन्द्र गर्ग, 0172-4010679, kcg831@yahoo.com

यदि आपको ऐसा लगता है कि आपको अपने ही घर में सकून नहीं तो कुछ ऐसा कर के देखें

भारतेन्दु सूद

अक्सर ऐसा भी होता है कि जिसने सारा घर खड़ा किया होता है, उसे अपने ही घर में मालिक होते हुये भी सकून नहीं होता। अपने घर के सदस्यों की शिकायत करते नजर आता हैं, लोग सुनते हैं, पर समाधान किसी के पास नहीं होता। वे आधा एक घंटा उसकी बात सुन सकते हैं परन्तु उसके पश्चात वह कुछ नहीं करते। कारण कुछ ऐसा ही हालत उनके अपने घर में भी होता है। वापिस उसको अपने घर और जिन से शिकायत होती है, उन्ही के पास जाना पड़ता है, चाहे उसे बुरा लगे या अच्छा।

एक पुस्तक पढ़ रहा था, लेखक ने एक उपाय सुझाया था। उसका कहना था–––वेसे तो यह दुनिया ही सराय है जहां व्यक्ति कुछ पल के लिये महमान बन कर आता है, तो क्यों न अपने घर में भी महमान बन कर रहे?

पहली बात, जब आप अपने बनाये घर में ही अपने आप को महमान समझते हैं तो इस बात का अहंकार खत्म होने लगता है कि मैं इस घर की मालकिन या मालिक हूं। इस से भी अच्छा है कि हम यूं समझे कि यह तो सब ईश्वर का है जो उसने मुझे प्रयोग के लिये दिया था। इस सच्चाई को स्वीकार किजीये कि यह घर तो रहेगा परन्तु मैं नहीं रहूंगा। हे ईश्वर आपने मुझे सर ढकने की जगह दी है, आपका कोटि कोटि धन्यावाद। यह विनम्रता हृदय की खुशी को बड़ाती है। व्यक्ति का मन से खुश रहना बहुत बड़ी बात है।

जब आप घर में महमान बन कर रहेंगे तो घर में अपना प्रभुत्व दिखाने का प्रश्न ही खत्म हो गया। पहले जब आप अपने आप को घर का मलिक मानते थे, तो यह भी उमीद करते थे कि जो भी घर में हो वह मुझ से पूछ कर ही हो। जब सदस्य मनमानी करते तो स्वभाविक तौर पर आप को क्रोद्ध व खिज आती थी। परन्तु अब तो आप महमान है, महमान से पूछ कर तो काम किये नहीं जाते, इस लिये आप को गुस्सा आने की या खिजने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता । जब आप को क्रोद्ध व रोष नहीं रहेगा तो स्वभाविक है आप प्रसन्न रहेंगे व ऐसी हालत में स्वास्थय पर भी अनुकूल असर पड़ेगा और आयु में वृद्धि स्वभाविक है। जरा सेचिये कितना बड़ा फायदा है!

महमान सदैव विनम्र रहता है, यदि उसे कुछ अच्छा नहीं लगता तो भी प्रगट नहीं करता। जो उसे खाने को दिया जाता है , खा लेता है व खाने के बाद प्रशंसा के कुछ शब्द भी बोलता है, घन्यावाद करता है जो कि शायद जब आप एक मालिक के रूप में रहते थे तो आप ने नहीं किया, क्योंकि यह सब तो आप ने अपना अधिकार माना। अब आप पहले की तरह अपनी पसन्द को दूसरों पर ठोंसने की कोशिश नहीं करते और न ही हर बात में टोकते है। जब हम प्रशंसा करना और धन्यावाद करना अपनी आदत बना लेते हैं, दूसरों की पसन्द और विचारों को सम्मान देते हैं तो परस्परिक सम्बन्धों का सुधरना स्वभाविक हो जाता है।

एक और परिवर्तन करे बिन मांगे अपनी राय भी न दें। जैसे महमान सिर्फ देखता ही है और कहता नहीं जब तक आग्रह न किया जाये वैसे ही अपने आप को बना लें। जब आपकी राय मांगी जाय तो ईमानदारी से दें।

जैसे महमान घर में सब का आदर ही करता है चाहे उस घर का नौकर ही क्यों न हो, वैसे ही सब का आदर करना अपनी आदत बना लें। सब से बड़ी बात इस बात की चिन्ता से मुक्त हो जायें कि घर कैसे चलेगा। जब आप इस दुनिया में नहीं आयें थे तब भी यह संसार चल रहा था और विश्वास कीजिये जब आप चले जायेंगे तब भी ऐसा ही चलेगा। ईश्वर पर विश्वास करते हुये लोभ, मोह, क्रोद्ध व अहंकार से मुक्त हो कर जीवन काटे इसी में आपका, आपके परिवार व समाज का सुख है।

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म् ।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

श्रीमती मीना सेठी आश्रम के बच्चों के साथ

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

All donations to this organization are exempted under section 80G

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

डा. अजय गुप्ता

श्रीमती अनिता महाजन

श्री मनीष तेहन

स्व. श्री सी एल धमीजा

श्री विरेन्द्र अलंकार

श्री हरि किशोर

श्री हरदियाल महाजन

श्री अमीरचन्द टंडन

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST

PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/-, 75 words Rs. 100/-

Contact : Bhartendu Sood, # 231, Sector 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in